इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

**BPCC-101**

# मनोविज्ञान : एक परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

## विशेषज्ञ समिति


प्रो. विमला वीराराघवन
पूर्व एमेरिटस प्रो. मनोविज्ञान
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. करुणा निधी
विभाग प्रमुख, मनोविज्ञान विभाग
मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई

डॉ. एस., पी. के. जेना
एसोसिएट प्रोफेसर
मनोविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. सुहास शेट गोवेकर
प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्वाति पात्रा
प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मोनिका मिश्रा
सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. स्मिता गुप्ता
सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आशिमा नेहरा
तंत्रिका मनोविज्ञान, एम्स दिल्ली


**पाठ्यक्रम समन्वयक**


डॉ. स्मिता गुप्ता, मनोविज्ञान
एसओएस


## पाठ्यक्रम निर्माण दल

| खंड | खंड का नाम | इकाई लेखक | अनुवादक | पुनर्रीक्षण | संपादक |
|---|---|---|---|---|---|
| **खंड 1** | **मनोविज्ञान का परिचय** | | | | |
| इकाई 1 | मनोविज्ञान की उत्पत्तिः | प्रो. अमूल्य खुराना मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित) | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |
| इकाई 2 | मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र | प्रो. अमूल्य खुराना मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित) | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |
| **खंड 2** | **प्रत्यक्षण** | | | | |
| इकाई 3 | प्रत्यक्षणः अर्थ, नियम प्रत्यक्षण आत्मक स्थिरता और प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक | डॉ आरती सिंह इग्नू | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |
| इकाई 4 | प्रत्यक्षणः प्रकार एवं त्रुटियाँ | डॉ आरती सिंह इग्नू | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |
| **खंड 3** | **चिंतन और भाषा** | | | | |
| इकाई 5 | चिंतन और भाषा | डॉ आरती सिंह इग्नू | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |
| **खंड 4** | **अधिगम और स्मृति** | | | | |
| इकाई 6 | अधिगम | डॉ आरती सिंह इग्नू | सोनम मिश्रा प्रतिलेखक इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद त्रिपाठी, ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता एवं डॉ आरती सिंह इग्नू, नई दिल्ली |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| इकाई 7 | स्मृति | डॉ आरती सिंह<br>इग्नू | सोनम मिश्रा<br>प्रतिलेखक<br>इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद<br>त्रिपाठी, ईश्वर शरण<br>डिग्री कॉलेज<br>इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता<br>एवं डॉ आरती सिंह<br>इग्नू, नई दिल्ली |
| **खंड 5** | **अभिप्रेरणा और संवेग** | | | | |
| इकाई 8 | अभिप्रेरणा | डॉ सुहास शेटगोवेकर<br>इग्नू | सोनम मिश्रा<br>प्रतिलेखक<br>इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद<br>त्रिपाठी, ईश्वर शरण<br>डिग्री कॉलेज<br>इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता<br>एवं डॉ आरती सिंह<br>इग्नू, नई दिल्ली |
| इकाई 9 | संवेग | डॉ सुहास शेटगोवेकर<br>इग्नू | सोनम मिश्रा<br>प्रतिलेखक<br>इलाहाबाद | डॉ. विवेकानंद<br>त्रिपाठी, ईश्वर शरण<br>डिग्री कॉलेज<br>इलाहाबाद | डॉ. स्मिता गुप्ता<br>एवं डॉ आरती सिंह<br>इग्नू, नई दिल्ली |
| बीपीसीसी–101 में प्रैक्टिकल | | | | | |

## पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. स्मिता गुप्ता
सह-आचार्य
मनोविज्ञान विभाग विद्यापीठ
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

## प्रमुख संपादक

डॉ. स्मिता गुप्ता
सह-आचार्य
मनोविज्ञान विभाग विद्यापीठ
एसओएसएस, इग्नू, नई दिल्ली

## सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर
असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री हेमन्त परीदा
असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुरेश कुमार
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

फरवरी, 2020

*© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2020*

ISBN:

*सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साध न द्वारा।*

*इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली-110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें*

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स, सी-206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रित :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# विषय-वस्तु


| | | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| **खंड 1** | **मनोविज्ञान का परिचय** | **7** |
| इकाई 1 | मनोविज्ञान की उत्पत्ति | 9 |
| इकाई 2 | मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र | 21 |
| **खंड 2** | **प्रत्यक्षण** | **35** |
| इकाई 3 | प्रत्यक्षात्मक स्थिरता और प्रत्यक्षण को प्रभावित करने वाले कारक | 37 |
| इकाई 4 | प्रत्यक्षण : प्रकार एवं त्रृटियाँ | 55 |
| **खंड 3** | **चिंतन और भाषा** | 71 |
| इकाई 5 | चिंतन और भाषा | 73 |
| **खंड 4** | **अधिगम और स्मृति** | **91** |
| इकाई 6 | अधिगम | 93 |
| इकाई 7 | स्मृति | 113 |
| **खंड 5** | **अभिप्रेरणा और संवेग** | **129** |
| इकाई 8 | अभिप्रेरणा | 131 |
| इकाई 9 | संवेग | 144 |
| **बीपीसीसी–101 में प्रैक्टिकल** | | **163** |

# पाठ्यक्रम परिचय

मनोविज्ञान : एक परिचय नामक पाठ्यक्रम बी.ए. आनर्स के पहले सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा आपको मनोविज्ञान की संकल्पना और उसका अर्थ समझाना है। यह पाठ्यक्रम मानव के व्यवहार, उनकी संज्ञानात्मक प्रक्रिया, जैविक प्रक्रिया एवं उनके स्नेहपूर्ण प्रक्रियाओं का भी उल्लेख करता है जिनके चलते सभी मनुष्य एक तरह का व्यवहार नहीं दिखाता है।

इस पाठ्यक्रम का पहले खण्ड 'मनोविज्ञान का परिचय' है जिसमें इकाईयों द्वारा मनोविज्ञान कि उत्पत्ति और उसका भारत के साथ साथ पूरे विश्व में एक स्वतंत्र विभाग की तरह उसके उद्भव को भी दर्शाता है। इस पाठ्यक्रम का दूसरा खण्ड प्रत्यक्षण से जुड़े कारक, नियम, स्थिरता एवं प्रत्येक्षण की त्रृटियाँ को समझाता है।

इस पाठ्यक्रम का तीसरा खण्ड चिंतन और भाषा है जो कि चिंतन और रचनात्मकता को दर्शाता है। पाठ्यक्रम के चौथे खण्ड में अधिगम और स्मृति की परिभाषा प्रक्रिया, सिद्धांत तथा उनके चरणों के बारे में उल्लेख करता है। पाठ्यक्रम का अंतिम खण्ड अभिप्रेरणा और संवेग है जिसकी इकाइयों में आपको अभिप्रेरणा तथा संवेग की संकल्पना एवं सिद्धांतों को समझाया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# खण्ड 1
# मनोविज्ञान का परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# खण्ड 1 मनोविज्ञान का परिचय

इस खण्ड में दो इकाइयाँ हैं। पहली इकाई, मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास का विवरण करता है। इस इकाई के द्वारा आपको मनोविज्ञान की परिभाषा, उसकी उत्पत्ति, उसकी प्रवृत्ति, अन्य विषयों से उसके अंतःसंबंध के बारे में बताया जायेगा।

खण्ड की दूसरी इकाई में मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और उसके क्षेत्रों को समझाया गया है। इस इकाई के द्वारा आप मनोविज्ञान के क्षेत्रों, उपक्षेत्रों तथा अन्य विषयों से उसके संबंधों को आप समझ पायेंगे। मनोविज्ञान के अनुप्रयोगों के बारे में भी इस इकाई में विवेचना की गई है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# इकाई 1 मनोविज्ञान की उत्पत्ति*

**इकाई की रूपरेखा**

1.1 परिचय

1.0 उद्देश्य

1.2 मनोविज्ञान की परिभाषा

1.2.1 प्रारंभिक परिभाषाएँ

1.2.2 वर्तमान परिभाषाएँ

1.2.3 प्रकृति और व्यवहार के लक्षण

1.3 मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास

1.4 मनोविज्ञानः एक विज्ञान के रूप में

1.5 अध्याय सारांष

1.6 अध्याय समाप्ति के प्रश्न

1.7 शब्दावली

1.8 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

1.9 संदर्भ और पाठन के सुझाव

## 1.1 परिचय

मनोविज्ञान का संबंध मानव जीवन के लगभग हर पहलु से है। मनोविज्ञान का क्षेत्र मानव के व्यवहार पक्ष से संबंधित है, और षायद यही कारण है कि हर किसी को मनोविज्ञान के बारे में जानने की उत्सुकता होती है। दूसरी ओर, मनोविज्ञान के बारे में लोगों में कई गलत धारणाएं एवं भ्रांतियां भी हैं। बहुत से लोग सोचते हैं। कि, मनोविज्ञान का सरोकार केवल असामान्य लोगों से हैं। और कुछ लोगों को लगता है कि, मनोवैज्ञानिक केवल उनको देखकर या उनके चेहरे की भाव भंगिमाएँ देखकर ही उनके मन की बात जान लेंगे। ये लोग अक्सर ज्योतिषियों, रत्नविज्ञानी, अंक विशेषज्ञ, हस्तरेखा विशेषज्ञ या ग्राफोलॉजिस्ट के साथ मनोवैज्ञानिकों की बराबरी करते हैं, जो लोगों के जीवन की समस्याओं को हल करने और भविष्य में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करने का दावा करते हैं। आपने 'मनोविज्ञान', 'मनोवैज्ञानिक', 'मानसिक' आदि शब्द सुने होंगे, लेकिन क्या आप जानते हैं। कि मनोविज्ञान का अर्थ क्या है और यह कैसे विकसित हुआ? मनोविज्ञान एक 'विज्ञान' है या एक 'कला' है? विज्ञान क्या है और इसकी विशेषताएँ क्या–क्या हैं? मनोविज्ञान की विषयवस्तु क्या है? इस अध्याय में आपको इन प्रश्नों के अलावा ऐसे ही बहुत से और प्रश्नों के जवाब भी मिलेंगे। मनोविज्ञान का अध्ययन करने से, आप यह समझ पाएंगे कि मनोविज्ञान क्या है, और क्या नहीं है। यह इकाई मनोविज्ञान विषय का परिचय देती हैं।

## 1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्न कार्य में सक्षम होंगे:

- मनोविज्ञान को परिभाषित कर सकेगें।
- मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और दृष्टिकोणों का वर्णन कर सकेगें।

*प्रो. अमूल्य खुराना, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित)

- मनोविज्ञान के तरीकों और उपक्षेत्रों (subfields) की व्याख्या कर सकेगें।
- भारतीय संदर्भ में मनोविज्ञान के शोधों को निरूपित कर सकेगें।

## 1.2 मनोविज्ञान की परिभाषा

मनोविज्ञान को अलग अलग लेखकों द्वारा कई तरीकों से परिभाषित किया गया हैं। मनोवैज्ञानिक इस बात पर बहस करते थे कि मनोविज्ञान के केंद्र ''मन'', ''चेतना'' या ''व्यवहार'' किसको होना चाहिए। आइए हम देखें कि कैसे मनोविज्ञान की परिभाषाओं ने पिछले कई वर्षों में एक लम्बा सफर तय किया हैं।

### 1.2.1 प्रारंभिक परिभाषाएँ

पूर्व में, मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र का हिस्सा था। प्राचीन दार्शनिक, आत्मा के अध्ययन में रुचि रखते थे। इस प्रकार, यह सर्वप्रथम 'आत्मा के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया गया था। हालाँकि, 'आत्मा' शब्द के बहुत व्यापक और विस्तृत अर्थ रहे हैं, इसलिए इसे अस्पष्ट शब्द माना जाता रहा है, और मध्य कालीन युग में इसी वजह से इसकी कठोर आलोचना होती थी। आत्मा के भौतिक अस्तित्व, उसके वजन और उसकी मात्रा के बारे में कई प्रश्न रहे हैं।

दंडापानी (2004) में कहा गया है कि ''सामान्य जन–मानस आत्मा, मन और चेतना जैसे जटिल और गूढ़ शब्दों पर को समझने, और उन पर विश्वास करने के लिए अनुभवहीन थे। ऐसा माना जाता था, और ठीक ऐसा ही था, कि प्रत्येक मनुष्य में एक आत्मा होती है जो उसे हर क्षण प्रभावित करती रहती हैं। एक दार्शनिक के लिए आत्मा ही वो दृढ़ आधार है, जिस पर नैतिक मूल्य बनते हैं। अपनी आत्मा की अनुभूति को ही जीवन का मुख्य उद्देश्य माना जाता था। ......आत्मा के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान की यह परिभाषा मूलतः इस वजह से अस्वीकार्य कर दी गयी क्योंकि, आत्मा की सटीक प्रकृति और गुणों का कोई पुख्ता प्रमाण या साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया जा सका था। इसे इसके पराभौतिक (भौतिक आधार से परे) आध्यात्मिक प्रकृति के कारण अस्वीकार्य कर दिया गया था। ये विज्ञान के सिद्धांतों को संतुष्ट करने के लिए अपर्याप्त थी...... "

इस प्रकार, इस परिभाषा को मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया था। इसके पश्चात, कुछ प्राचीन यूनानी दार्शनिकों द्वारा मनोविज्ञान को 'मन के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया गया था। उनके अनुसार, मनोविज्ञान को मानसिक दर्शन की एक शाखा के रूप में माना गया था। चूँकि इस परिभाषा में मानव के प्रकट/अभिव्यक्त व्यवहार शामिल नहीं है और मन का मापन सीधे तौर पर नहीं किया जा सकता, अतः मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस परिभाषा को भी अस्वीकार्य कर दिया गया था।

तब, मनोविज्ञान को 'चेतना के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया गया। बग्गा और सिंह (1990) के अनुसार, मनोविज्ञान के इतिहास में एक समय, यह महसूस किया गया कि, मनोविज्ञान का मुख्य सरोकार सचेतन अनुभव से हैं।

चेतना हमें हमारे आस–पास की परिस्थितियों और चीजों के बारे में सचेत व जागरूक बनाती हैं। यह परिभाषा भी अब अप्रचलित हो चुकी है और इसे निम्नलिखित कारणों से अस्वीकार कर दिया गयाः

चेतना का वस्तुनिष्ठ अध्ययन नहीं किया जा सकता क्योंकि ये काफी व्यक्तिगत और व्यक्तिपरक हैं। दूसरी आपत्ति तेजी से विकसित हो रही असामान्य मनोविज्ञान की उस

शाखा से आई है, जो मन के अचेतन हिस्से के अध्ययन को मनोविज्ञान के परिक्षेत्र में लेकर आए। चेतना शब्द में पशु या मानव के व्यवहार समाहित नहीं होते हैं।

चेतना शब्द में भी दर्षनिकता का पुट माना जाता है और यह आधुनिक वैज्ञानिक विचारधारा वाले मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता हैं। अंततः, आधुनिक युग में मनोविज्ञान को 'व्यवहार के विज्ञान' के रूप में परिभाषित किया गया हैं। बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में, 'व्यवहारवाद' स्कूल के जनक वॉटसन ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार के अध्ययन' के रूप में परिभाषित किया। मॉर्गन एट आल० (1986) के अनुसार, वाटसन ने मन को मनोविज्ञान की विषय वस्तु के रूप में अस्वीकार कर दिया और इस चीज पर जोर दिया कि, मनोविज्ञान को केवल व्यवहार (लोगों और जानवरों की अवलोकन योग्य (या संभावित रूप से अवलोकन योग्य गतिविधियाँ) के अध्ययन तक ही सीमित रखा जाए। वाटसन की राय अनुसार मानव और जानवरों के व्यवहार में कोई मूलभूत अंतर नहीं है, और हम जानवरों के व्यवहार के अध्ययन से मानव व्यवहार के बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। वॉटसन ने इस बात पर काफी जोर दिया कि कोई भी व्यवहार जन्मजात नहीं होता है, और सब कुछ सीखा जा सकता हैं। इस संदर्भ में, वुडवर्थ (1948) ने पहले कहा था कि, पहले मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को खो दिया, फिर अपने मन को और फिर उसने अपनी चेतना खो दी। यह भी एक तरह का व्यवहार हैं। जैसा कि हम नीचे देखेंगे, 'व्यवहार' शब्द अभी भी लगभग सभी आधुनिक परिभाषाओं में मौजूद हैं।

### 1.2.2 वर्तमान परिभाषाएँ

हिलगार्ड, एटकिंसन, और एटकिंसन (1975) ने मनोविज्ञान की समय के साथ बदलती परिभाषाओं को विलियम जेम्स (1890) से शुरू करके केनेथ क्लार्क और जॉर्ज मिलर (1970) तक संकलित किया हैं। बग्गा और सिंह (1990) ने 'वुडवर्थ' और 'मन्न' की निम्नलिखित क्रमषः दो परिभाषाओं का संदर्भ लिया हैः ''किसी व्यक्ति का अपने वातावरण के सम्बंध में किए गए क्रिया कलापों का वैज्ञानिक अध्ययन ही मनोविज्ञान है''।

''मनोविज्ञान आज व्यवहार की वैज्ञानिक पड़ताल के साथ–साथ व्यवहार के दृष्टिकोण से भी चिंतित है, जो पहले के मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव के रूप में निपटाया था''।

कालानुक्रमिक क्रम में मनोविज्ञान की कुछ और हालिया परिभाषाएँ इस प्रकार हैं :

- मनोविज्ञान मनुष्य और पशु के व्यवहार का विज्ञान हैं। इसमें मानवीय समस्याओं के लिए इस विज्ञान का अनुप्रयोग शामिल हैं। (Morgan et al., 1986)
- मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक संक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है। Feldman,1996)
- मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक संक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन हैं। व्यवहार और मानसिक संक्रियायें कैसे एक जीव की शारीरिक स्थिति, मानसिक स्थिति और बाहरी वातावरण/परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं। (Tavris and Wade, 1997)
- मनोविज्ञान मानव व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के बारे में है, और उन परिस्थितियों के बारे में है जिसमें व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाएं घटित होती हैं। (Das, 1998)
- मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं का विज्ञान हैं। (Lahey,1998)
- मनोविज्ञान व्यवहार और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का विज्ञान हैं। (Baron, 1999)
- मनोविज्ञान व्यवहार और मन का वैज्ञानिक अध्ययन हैं। (Nairne, 2003)

- एक विज्ञान जिसमें लोग (और अन्य प्रजातियों के सदस्य) जैसा व्यवहार करते है, उसकी अभिप्रेरणा समझने के लिए व्यवहार और अन्य साक्ष्यों का उपयोग कर के उन आंतरिक प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश की जाती हैं। (Eysenck, 2004)
- मनोविज्ञान व्यवहार और मानसिक संक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन हैं। (Ciccarelli & Meyer,2006; Coon & Mitterer, 2007, 2008)
- एक विज्ञान जो व्यवहार और मानसिक संक्रियाओं का अध्ययन करता हैं। (Rathus,2008)

जैसा कि उपरोक्त परिभाषाओं में स्पष्ट है, इन सभी परिभाषों में 'व्यवहार के अध्ययन (मानव और पशु)' पर जोर दिया गया हैं। इसके अलावा, अधिकांश लेखकों ने मनोविज्ञान की अपनी परिभाषाओं में 'संज्ञानात्मक / मानसिक संक्रियाओं' को भी सम्मिलित किया हैं। लेकिन, व्यवहार क्या है? अब हम व्यवहार की प्रकृति और विशेषताओं अध्ययन करेंगे।

### 1.2.3 व्यवहार की प्रकृति और लक्षण

व्यवहार एक व्यापक शब्द और एक जटिल गोचर हैं। इस खंड के अध्याय में, हम व्यवहार की प्रकृति और लक्षणों पर चर्चा करेंगे। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, व्यवहार वह सब कुछ या कुछ भी है जो एक मानव या जन्तु करता है जिसे किसी भी तरह से देखा जा सकता हो। दूसरे शब्दों में, व्यवहार में, जीवों की वे सभी क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं शामिल हैं। जिन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मापा जा सकता हैं। व्यवहार का अर्थ केवल शारीरिक गति/ संचलन से नहीं है, बल्कि इसमें मानसिक और संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं भी शामिल हो सकती हैं। जैसे कि भावनायें, अभिवृत्ति, विचार, संवेग और अन्य सभी आंतरिक शारीरिक एवं मानसिक प्रक्रियाएँ, जिन्हें सीधे तौर पर (प्रत्यक्ष) नहीं देखा जा सकता है, लेकिन इनडायरेक्टली (अप्रत्यक्ष तौर से) मापा जा सकता हैं। जैसे कि, लोग क्या कहते हैं (मुखर व्यवहार), क्या करते हैं। (शारीरिक व्यवहार) और कैसे वे विभिन्न समस्याओं और स्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं।

अब हम मानव व्यवहार की कुछ सामान्य विशेषताओं पर विचार करेंगे, जैसा कि परमेस्वरन और बीना (1988, 2002) द्वारा वर्णित हैं। ये हैं।:

- **व्यवहार कई कारकों से प्रभावित होता है**

  व्यवहार कई कारकों जैसेः जैविक, सांस्कृतिक, सामाजिक, पर्यावरण, पूर्व अनुभव, अभिप्रेरणात्मक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक (जैसे भावनायें, संवेग, अभिप्रेरणा, विचार) इत्यादि से प्रभावित होता हैं।

- **व्यवहार की जटिलता में भिन्नता**

  व्यवहार एक कलम उठाने जितना आसान भी हो सकता है, और एक दोस्त को पुकारने या छींकनें जैसी अनैच्छिक प्रतिक्रियाएँ इत्यादि भी। कुछ अन्य प्रकार के व्यवहारों में नियत कौशल शामिल होते हैं, जो एक अवधि में आदत बन जाते हैं, जैसे कि गिटार बजाना, साइकिल चलाना आदि। इनके अलावा भी कुछ अन्य व्यवहारों में जटिल गतिविधियाँ शामिल होती हैं। जैसे, किसी कार को ठीक करना, चंद्रमा पर यान उतारना, लड़ाकू विमान उड़ाना, चट्टान पर चढ़ना आदि, जैसी गतिविधियाँ अत्यधिक जटिल व्यवहार के कुछ उदाहरण हैं।

- व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक विभिन्न प्रकार के होते हैं। व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों के दो बड़े समूह हैं।:

i) जो व्यक्ति से संबंधित हैं। (आंतरिक कारक) तथा

ii) जो पर्यावरण से संबंधित हैं। (वाह्य कारक)।

किसी व्यक्ति से संबंधित कारकों को शारीरिक (जैविक जरूरतों जैसे भूख, प्यास आदि) और मनोवैज्ञानिक (विचारों , मान्यताओं, दृष्टिकोण आदि) के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है ।

पर्यावरणीय कारकों में भौतिक परिवेश, परिवार, मित्र, वष्हद समाज और यहां तक कि समग्र सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि शामिल हैं।

- ***व्यक्तिगत भिन्नतायें***

एक व्यक्ति का व्यवहार दूसरे व्यक्ति के व्यवहार से, साथ ही साथ, एक समूह के लोगों का व्यवहार दूसरे समूह के लोगों के व्यवहार से भिन्न होता हैं। हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अपनी शारीरिक–क्रिया और शारीरिक स्थितियों में, अपने पूर्व अनुभवों में, अपनी क्षमताओं में, अपनी पृष्ठभूमि आदि में भिन्न होता हैं। अतः ये पूर्णतः स्वाभाविक है कि, यदि दस लोगों को एक ही माहौल में रखा जाए, तो प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार कुछ मामलों में या कुछ डिग्री में दूसरों के व्यवहार से भिन्न होगा।

- ***व्यवहार में समानतायें भी होती हैं।***

हालाँकि एक व्यक्ति का व्यवहार से दूसरे व्यक्ति के व्यवहार से भिन्न होता है, लेकिन इसका ये बिल्कुल भी मतलब नहीं होता है कि, सभी लोग हर समय, और हर परिस्थिति में एक दूसरे से भिन्न होते हैं। लोगों के बीच व्यवहारों में काफी हद तक समानतायें भी होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की आंख में धूल का एक कण गिर जाता है तो, वह उसे यथा षीघ्र निकालने की कोशिश करता हैं। इस प्रकार के व्यवहार सार्वभौमिक तौर पर पाए जाते हैं।

- ***व्यवहार हमेशा उद्देश्यपूर्ण और लक्ष्य निर्देशित होते हैं।***

मानव व्यवहार हमेशा उद्देश्यपूर्ण होते हैं। और किसी के कार्यों को हमेशा किसी न किसी लक्ष्य की ओर निर्देशित किया जाता हैं। एक लड़का बैठा पढाई कर रहा है और अचानक उठ कर जाता है और एक गिलास पानी पीता हैं। यहाँ, लड़के का लक्ष्य एक गिलास पानी पीना है, और उद्देश्य अपनी प्यास बुझाना हैं। वहीं दूसरी तरफ, एक लड़का बैठकर पढ़ाई कर रहा है, और उसे ठंड लग रही हैं। वह उठकर पंखे को बंद कर देता हैं। यहां लक्ष्य पंखे को बंद करना है और उद्देश्य ठंड की असुविधा से बचना हैं। तो, इस प्रकार हमारे सभी व्यवहार वर्गीकृत किए जा सकते हैं।:

i) पहुँच व्यवहार (धनात्मक लक्ष्य निर्देशित) या

ii) परिहार व्यवहार (ऋणात्मक लक्ष्य परिहार)

- ***व्यवहार काफी हद तक परिवर्तनशील है***

यह पूर्व–उल्लेखित है कि, व्यवहार को प्रभावित करने वाले कई कारक हैं। इस परिपेक्ष्य में, इन कारकों में परिवर्तन करके व्यवहार में परिवर्तन संभव हैं। यह मानव व्यवहार की परिवर्तनशीलता ही है, जो एक बुरे आदमी को एक अच्छा आदमी, और एक अच्छे आदमी को एक बुरा आदमी बनाने की क्षमता रखती है । यह व्यवहार की एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो लोगों को नए परिवेश में समायोजित करने में मदद करती हैं। ये परिवर्तनशीलता किसी व्यक्ति के अभ्यास या अनुभवों (सीखने) का परिणाम होती हैं।

- ***व्यवहार में स्थिरता भी दिखाई देती है***

  यद्यपि व्यवहार में संभावित परिवर्तनों पर जोर दिया गया है, यहाँ ये भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि, जीवन हमेषा, सभी प्रकार के परिवर्तनों से भरा नहीं होता हैं। जहाँ व्यवहार में परिवर्तनशीलता होती है, वहीं व्यवहार में एक निश्चित स्थिरता भी होती हैं। व्यवहार पर्यावरण में होने वाले हर परिवर्तन के साथ नहीं बदलता है, और न ही मनुष्य के सभी प्रकार के व्यवहारों में बदलाव आता हैं। मानव व्यवहार में बहुत स्थिरता भी दिखती हैं। उदाहरण के लिए, अभी भी आप अपनी दादी के, पुराने विचारों और उनके जीने के पुराने तरीकों को प्राथमिकता देते हुए पा सकते हैं, हालांकि वह एक अति–आधुनिक समाज में जीवन जी रही हों।

- ***व्यवहार एकीकृत/समेकित है***

  जैसा कि पूर्वल्लेखित है, मानव व्यवहार बहुत से कारकों और कई प्रकार के उद्देश्यों से प्रभावित होता हैं। प्रत्येक मनुष्य के दैहिक, मनोवैज्ञानिक, व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्य होते हैं। हर मनुष्य विभिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरता हैं। इन सब के बावजूद, व्यवहार हमेशा एक क्रम और उद्देश्यों के पदानुक्रम को दर्शाता हैं। प्रत्येक व्यक्ति सम्पूर्ण व्यक्ति के रूप में व्यवहार करता है और विभिन्न उद्देश्यों, अलग–अलग सीखों और विभिन्न प्रकार के प्रभावित करने वाले कारकों के, संगठन की इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप व्यवहार का एकीकरण परिलक्षित होता हैं।

इस प्रकार, जब एक व्यक्ति को अलग–अलग परिस्थितियों में रखा जाता है, तब भी उसके व्यवहार में कुछ विशिष्ट तरीके और शैलियाँ स्पष्ट दिखायी देती हैं, जिनसे हमें उसके व्यवहार को समझने और उसके व्यवहार की भविष्यवाणी करने में मदद मिलती हैं। और इसी तरह, हम अक्सर कहते हैं कि, राम एक खुशनुमा किस्म का व्यक्ति है, गोबिंद एक अप्रिय किस्म का व्यक्ति है, कृष्ण एक मिलनसार स्वभाव का व्यक्ति हैं। मनोवैज्ञानिक, व्यवहार के एकीकरण की इस प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए **व्यक्तित्व** शब्द का उपयोग करते हैं। किसी व्यक्ति के व्यवहार में एकीकरण की डिग्री जितनी अधिक होगी, उसका व्यवहार उतना ही अधिक प्रभावी होगा। इसलिए यह माना जा सकता है कि व्यवहार एक जटिल घटना है और व्यवहार का अध्ययन करना आसान काम नहीं हैं।

## 1.3 मनोविज्ञान का ऐतिहासिक विकास

मनोविज्ञान का उद्भव 1870 के दशक का हैं। 'साइकोलॉजी' (मनोविज्ञान) शब्द दो ग्रीक शब्दों से मिल कर बना है... 1) साइकी का अर्थ है ''आत्मा या साँस'' और 2) लोगोस का अर्थ है ''ज्ञान या अध्ययन'' (किसी चीज का अध्ययन या जाँच)। उन्नीसवीं सदी से पहले 'साइकोलॉजी' (मनोविज्ञान) शब्द आम उपयोग में नहीं था, और मनोविज्ञान का क्षेत्र वास्तव में उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक एक स्वतंत्र विज्ञान नहीं बन पाया था।

1879 में मनोविज्ञान एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में उभरा, जब जर्मनी के प्रोफेसर विल्हेम वुंड्ट ने जर्मनी के लीपजिग विश्वविद्यालय में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की। बोल्स (1993) के अनुसार, वुंड्ट एक प्रशिक्षित मेडिकल डॉक्टर थे और अपने करियर की शुरुआत में, उन्हें उन्नीसवीं सदी के कुछ महान शरीरक्रिया विज्ञानियों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। मनोविज्ञान की बौद्धिक जड़ें दर्शनशास्त्र और शरीरक्रिया विज्ञान के समागम में हैं। वुंड्ट को पारंपरिक रूप से आधुनिक मनोविज्ञान के संस्थापक या पिता के रूप में जाना जाता हैं। 1879 के वर्ष को एक उल्लेखनीय वर्ष के रूप में देखा जाता है जब मनोविज्ञान अंततः एक अद्वितीय/अनूठे क्षेत्र के रूप में उभरा। वुंड्ट

से पहले, मनोविज्ञान में विशेषज्ञता की डिग्री प्राप्त होना संभव नहीं था, क्योंकि उनसे पहले कहीं पर भी, कोई आधिकारिक मनोवैज्ञानिक या मनोविज्ञान विभाग नहीं था। वुंड्ट ने 'मन' की संरचना का अध्ययन करना शुरू कर दिया, जिसने, तत्कालिक अनुभव (चेतन), व्यक्तिपरक अनुभवों की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं जैसे संवेदनाओं, विचारों, भावनाओं और संवेग, को संदर्भित किया।

इस प्रकार, औपचारिक रूप से, मनोविज्ञान को 1879 में एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

**स्व मूल्यांकन प्रश्न 1**

निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें:

1) ____________________ ने जर्मनी के लीपजिग विश्वविद्यालय में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला की स्थापना की।

2) ___________________ में जीवों की सभी क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं शामिल हैं। जिन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मापा जा सकता हैं।

3) _______________ ने यह विचार रखा कि मानव और पशु व्यवहार के बीच कोई आवश्यक अंतर नहीं हैं।

4) मानव व्यवहार हमेशा उद्देश्यपूर्ण होता है और किसी के कार्यों को हमेशा ___________________________ की ओर निर्देशित किया जाता हैं।

5) आधुनिक युग ने मनोविज्ञान को '_____________________________' के रूप में परिभाषित किया हैं।

## 1.4 मनोविज्ञानः एक विज्ञान के रूप में

मनोविज्ञान को व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया हैं। लेकिन क्या यह भी वैसा ही विज्ञान है जैसा कि भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और प्राणीशास्त्र, या कुछ अलग तरह का विज्ञान है? इस खंड में हम विज्ञान की कुछ परिभाषाओं को देखेंगे। हम विज्ञान की प्रकृति और विशेषताओं पर भी चर्चा करेंगे और मनोविज्ञान को एक विज्ञान के रूप में समझेंगे। आइए हम विज्ञान की निम्नलिखित परिभाषाओं को देखें:

- विज्ञान, ज्ञान का एक व्यवस्थित निकाय है जो सावधानी पूर्वक किए गए प्रेक्षणों और घटनाओं के मापन के माध्यम से इकट्ठा की गई सूचना पर आधारित होता हैं। (मॉर्गन एट अल।, 1986)।
- विज्ञान, क्रमिक प्रेक्षणों पर आधारित ज्ञान का एक दृष्टिकोण है (सैमल, 1998) ।

विज्ञान का एकमात्र उद्देश्य भौतिक संसार की वस्तुओं और घटनाओं को वर्गीकृत करना, समझना और एकीकृत करना हैं। सटीक अवलोकन और प्रयोग, तर्क और सहज बोध के संयोजन का उपयोग करके, वैज्ञानिक उन नियमों को समझना चाहते हैं, जो प्राकृतिक ब्रह्मांड के सभी स्तरों को नियंत्रित करते हैं। ( आइए अब हम विज्ञान की विशेषताओं को देखें :

### 1.4.1 विज्ञान के लक्षण

विज्ञान, घटनाओं का अवलोकन मुख्य रूप से वर्गीकृत करने और सामान्य सिद्धांतों और कानूनों का वर्णन के रूप में नई घटनाओं की भविष्यवाणी की स्थापना के द्वारा विभिन्न

तरीकों से व्यवस्थित करता है। मनोविज्ञान उसी तरह से व्यवहार का अध्ययन करता है जिस तरह से अन्य विज्ञान अपने विषय वस्तु का अध्ययन करते हैं और इसलिए मनोविज्ञान उनके साथ कई विशेषताएं साझा करता हैं। मनोविज्ञान, अन्य विज्ञानों के साथ, एक विज्ञान के रूप में, निम्नलिखित विशेषताएं हैं, जैसा कि मॉर्गन एट अल (1986) द्वारा वर्णित है साझा करता हैं।

- **अनुभवजन्य अवलोकन**

  विज्ञान के अन्य विषयों की तरह, मनोविज्ञान शास्त्र भी, तर्क, राय या विश्वास के बजाय प्रयोग और प्रेक्षणों पर निर्भर करता हैं।

- **व्यवस्थित दृष्टिकोण और सिद्धांत**

  घटनाओं को समझने में हमारी मदद करने के लिए और उनसे ''कुछ अर्थ निकालने के लिए'' विज्ञान में प्रेक्षण और प्रयोगों के आँकड़े अनिवार्य हैं। वैज्ञानिक मर्यादित सिद्धांतों को खोजने की कोशिश करता है, जो लाभप्रद रूप से डेटा को संक्षेप में प्रस्तुत कर सके। अन्य वैज्ञानिक सिद्धांतों की तरह, मनोविज्ञान भी प्रेक्षण, डेटा संग्रहण, विश्लेषण और व्याख्या की एक क्रमबद्ध व्यवस्थित प्रक्रिया का अनुसरण करता हैं।

- **मापन**

  कई विज्ञान का एक अन्य विशिष्ट लक्षण मापन है, जो "निश्चित नियमों के अनुसार वस्तुओं या घटनाओं को अंक प्रदान करने" के रूप में परिभाषित किया गया हैं। भौतिक विज्ञान को विज्ञान के विषयों में सर्वोच्च स्थान (सबसे अधिक वैज्ञानिक) दिया गया है क्योंकि इसने सबसे सटीक मापन विकसित किए हैं।

- **शब्दों की परिभाषा**

  'सावधानीपूर्वक परिभाषित शब्दध्पद', विज्ञान की स्पष्ट सोच की मूलभूत आवश्यकता हैं। मनोविज्ञान की प्रक्रिया में सम्प्र्त्ययों को अवलोकनीय व्यवहार से जोड़ते हुए परिभाषित किया जाता है (जिसे संक्रियात्मक परिभाषा कहते हैं)। जब हम किसी संप्रत्यय को संक्रियात्मक तौर पर परिभाषित करते हैं, तो हम इसे मापने योग्य और अवलोकन योग्य संक्रियाओं (व्यवहार) के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, भौतिकी में लंबाई, ऊँचाई की अवधारणाएँ, और मनोविज्ञान में बुद्धिमत्ता, प्रेरणा, व्यक्तित्व जैसी अवधारणाएँ अवलोकनीय संक्रियाओं के रूप में ही परिभाषित की जाती हैं, जिन्हें मापने के लिए उनका प्रदर्शन किया जा सकता हैं। हालांकि, मनोविज्ञान कई व्यवहारों जैसे कि बहादुरी, दोस्ती, प्रेम, सौंदर्य आदि को मापा नहीं जा सकता है क्योंकि इन्हें संक्रियात्मक रूप से परिभाषित नहीं किया जा सकता हैं। उपरोक्त विशेषताएं मनोविज्ञान सहित सभी विज्ञानों के लिए उभयनिष्ठ हैं। हालांकि, मनोविज्ञान एक अलग प्रकार का विज्ञान (व्यवहार विज्ञान) हैं। भौतिकी या रसायन विज्ञान में, शोधकर्ता प्रक्रियाओं और घटनाओं की जांच करते हैं जो बहुत हद तक स्थिर और नियत रहते हैं। यही चीज इनमे मापना और सटीकता की एक उचित डिग्री के साथ भविष्यवाणी करना संभव बनाती हैं। लेकिन मानव व्यवहार के साथ ऐसा नहीं हैं।

  व्यवहार, जो अत्यधिक जटिल होता है, आसानी से नियंत्रणीय नहीं है, और भौतिक और रासायनिक पदार्थों की प्रतिक्रियाओं की तुलना में बहुत अधिक अप्रत्याशित प्रतीत होता हैं। जबकि अन्य विज्ञान मनुष्य के आसपास की चीजों की जांच करते हैं, मनोविज्ञान स्वयं मनुष्य का अध्ययन करता हैं। मनोवैज्ञानिक शोध में उपयोग की जाने वाली प्रविधियों में प्रेक्षण, साक्षात्कार, मनोवैज्ञानिक परीक्षण, प्रयोगशाला प्रयोग और सांख्यिकीय विश्लेषण शामिल हैं।

इस प्रकार, मनोविज्ञान को वैज्ञानिक जांच के समूह में सबसे छोटे सदस्य के तौर पर 'सामाजिक / व्यावहारिक विज्ञान' के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है, जिसमें मानव विज्ञान, अर्थशास्त्र, शिक्षा, भूगोल, इतिहास, भाषा विज्ञान, समाजशास्त्र आदि विषय शामिल हैं। (Rush, 1972) । विज्ञान का प्रथम समूह 'भौतिकीय विज्ञान' है, जिसमें भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान आदि जैसे विषय शामिल किए जाते हैं। अगला 'जैविक / जीवन विज्ञान' है जिसमें जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान आदि जैसे विषय शामिल हैं। व्यावहारिक समस्याओं के लिए ज्ञान का अनुप्रयोग एक कला हैं।यह उन चीजों को करने के लिए कौशल या आदत है जो अध्ययन, अभ्यास और विशेष अनुभव द्वारा हासिल की जाती हैं। चूंकि मनोविज्ञान के सिद्धांतों और कानूनों को कई स्थितियों (परिवारों, स्कूलों, संगठनों, पर्यावरण) में मानव समस्याओं को हल करने के लिए लागू किया जाता है और साथ ही व्यवहार विकारों और भावनात्मक समस्याओं का इलाज किया जाता है, यह एक कला भी हैं।

**स्व मूल्यांकन प्रश्न 2**

बताएं कि क्या निम्नलिखित 'सही' या 'गलत' हैं।:

1) 'जैविक / जीवन विज्ञान' जिसमें मानवविज्ञान जैसे विषय शामिल हैं, अर्थशास्त्र, शिक्षा, इतिहास, भाषा विज्ञान, समाजशास्त्र आदि। ___________

2) विज्ञान के अन्य विषयों की तरह, मनोविज्ञान का अनुशासन पर निर्भर करता है तर्क, राय या विश्वास के बजाय प्रयोग और अवलोकन।___________

3) विज्ञान का एकमात्र उद्देश्य वस्तुओं को वर्गीकृत करना, समझना और एकीकृत करना है भौतिक जगत की घटनाएं। __________

4) मनोविज्ञान को व्यवहार विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया हैं। _________

5) मनोविज्ञान को भौतिक विज्ञान समूह के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया हैं। _________

## 1.5 सार-संक्षेप

उपरोक्त चर्चा से यह कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान दर्शन से एक स्वतंत्र अकादमिक अनुशासन के रूप में उभरा। इस अध्याय में, 'मनोविज्ञान' शब्द को परिभाषित किया गया और प्रकृति के साथ–साथ इसके ऐतिहासिक विकास पर भी चर्चा की गई। अंत में, एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की विशेषताओं पर भी इस अध्याय में चर्चा की गई।

## 1.6 खंड के अंत पर प्रश्नावली

1) मनोविज्ञान की उत्पत्ति और विकास पर चर्चा करें।

2) व्यवहार की प्रकृति और विशेषताओं का विस्तृत विवरण दें।

3) मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास का वर्णन करें।

4) विज्ञान की विशेषताओं का वर्णन करें।

5) क्या हम मनोविज्ञान को विज्ञान मान सकते हैं।? उचित औचित्य के साथ अपने उत्तर का समर्थन करें।

## 1.7 शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| **व्यवहार** | : | मनुष्यों और जानवरों के अवलोकन योग्य कार्य और प्रतिक्रियाएं। व्यवहार में भी प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन योग्य गतिविधियाँ शामिल नहीं होती हैं, जैसे कि, आंतरिक मानसिक (संज्ञानात्मक) प्रक्रियाएँ (जैसे भावनाओं और विचारों) जब तक वे देखी और व्यवस्थित तरीके से मापी जा सकती हैं। |
| **व्यवहारवाद** | : | इस बात पर जोर देता है कि मनोविज्ञान को दिमाग पर ध्यान देने की बजाय व्यवहार पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। |
| **महत्वपूर्ण सोच (क्रिटिकल थिंकिंग)** | : | क्रिटिकल थिंकिंग का मतलब तर्कपूर्ण निर्णय (तार्किक और अच्छी तरह से सोचा गया निर्णय)। |
| **छद्म मनोविज्ञान** | : | कोई भी निराधार प्रणाली जो सतही तौर पर मनोविज्ञान से मिलती जुलती है। |
| **मनोविज्ञान** | : | मानव व्यवहार और संज्ञानात्मक (मानसिक) प्रक्रियाओं का विज्ञान। |
| **विज्ञान** | : | विज्ञान ज्ञान का एक व्यवस्थित निकाय है जिसे ध्यान से देखने और मापने की घटनाओं के माध्यम से इकट्ठा किया जाता हैं। |

## 1.8 स्व–मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

**स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1**

1) विल्हेम वुंड्ट
2) बी इह्वौर
3) वॉटसन
4) कुछ लक्ष्य या अन्य
5) व्यवहार का एक विज्ञान

**स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2**

1) झूठा
2) सच
3) सच
4) सच
5) असत्य

## 1.9 संदर्भ और पठन सुझाव

Baron, R.A.(1999). *Essentials of Psychology* (2nd edition). USA: Allyn and Bacon.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). *Introduction to Psychology* (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). Psychology: A Journey. (3rd edition) Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002) An Invitation to Psychology. Hyderabad, (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Bagga, Q. L. & Singh, A. (1990). Elemrnts of General Psychology. New Delhi: Arya Book Depot.

Baron, R.A.(1999). Essentials of Psychology (2nd edition). USA: Allyn & Bacon.

Beyer,B. K. (1995). Critical thinking. Bloomington, IN: Phi Delta Kappa Educational Foundation.

Bolles,R.C. (1993). The Story of Psychology. Portland:Brooks/Cole Pub Co.

Ciccarelli, S.K.& Meyer, G.E.(2006). Psychology. Delhi (India): Pearson Education, Inc.

Clark, K. E. & Miller, G. A. (eds.) (1970). Psychology. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

Coon, D. & Mitterer, J.O. (2007). Introduction to Psychology: Gateways to Mind and Behaviour (11th edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). Psychology: A Journey. (3rd edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Dandapani, S. (2004). General Psychology. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Das,J.P.(19980. The Working Mind: An Introduction to Psychology, New Delhi, Sage Publication

Eysenck, M.W.(2004). Psychology: An International Perspective. Psychology Press.

Feldman, R.S.(2004). Understanding Psychology (6thedition), New Delhi (India): Tata McGraw Hill.

Hilgard, E. R., Atkinson, R. C., & Atkinson, R.L. (1975). Introduction to Psychology (6th edition). New Delhi: Oxford & IBH Publishing Co.

James, W. (1890). The Principles of Psychology. N.Y.:Holt.

Lahey, Benjamin B. (1998). Psychology: An Introduction. New Delhi; Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). Introduction to Psychology (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill.

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

Nairne, J.S. (2003). Psychology: The Adaptive Mind (3rd edition). USA:Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (1988). Invitation to Psychology. New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002). An Invitation to Psychology. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Rathus, S.A. (2008). Psychology: Concepts & Connections. (9th edition). Canada: Wadsworth.

Rush, Harold M.F.(1972).The world of work and the behavioural sciences: A perspective and an overview. In Fred Luthans (Ed.). Contemporary readings in organisational behaviour. New York. McGraw-Hill Book Company.

Schick, T. & Vaughn, L.(2001). How to think about weird things: Critical thinking for a new age. New York: McGraw-Hill.

Tavris,C. & Warde,C. (1997). Psychology in Perspective (2nd Ed). New York: Addison Wesley Longman, Inc.

Woodworth, R. S. (1948). Contemporary Schools of Psychology. New York: Ronald.

Dalal, A. K. (2011). A journey back to the roots: Psychology in India. *Foundations of Indian Psychology Volume 1: Theories and Concepts*, 27.

Jain, A. K. (2005). Psychology in India. *The Psychologist*, *18*(4), 206-208.

Misra, G., & Paranjpe, E. A. C. (2012). Psychology in modern India. In*Encyclopedia of the history of psychological theories* (pp. 881-892). Springer US.

Singh, A. K. (1991). *The comprehensive history of psychology*. Motilal Banarsidass Publication.

Bangalore University. Retrieved March 19, 2018, from www.bangaloreuniversity.ac.in

NIMHANS. Retrieved March 19, 2018, from http://www.nimhans.kar.nic.in/mhsp/default.htm

National Seminar on Psychology in India: Past, Present and Future. Retrieved March 18, 2018, from http://www.infinityfoundation.com/mandala/images/Souvenir-Internet1.pdf

History of Development of Psychology in India. Retrieved March 19, 2018, from http://anilpinto.blogspot.in/2014/04/subject-history-of-development-of.html

Mathew, V. G. (n.d.). A Short History of Indian Psychology. Retrieved March 19, 2018, from http://www.psychology4all.com/historyi.htm

# इकाई 2 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और क्षेत्र*

## इकाई की रूपरेखा


2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 मनोविज्ञानः इसका अन्य क्षेत्रों / विज्ञानों से संबंध है

2.3 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और उसके क्षेत्र

- 2.3.1 मनोविज्ञान का प्रारंभिक विभाजन
- 2.3.2 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र
  - 2.3.2.1 जैव मनोविज्ञान
  - 2.3.2.2 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.3 तुलनात्मक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.4 सांस्कृतिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.5 प्रायोगिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.6 लैंगिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.7 अधिगम मनोविज्ञान
  - 2.3.2.8 व्यक्तित्व मनोविज्ञान
  - 2.3.2.9 शरीर क्रिया शारीरिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.10 संवेदना और प्रत्यक्षण मनोविज्ञान
  - 2.3.2.11 सामाजिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.12 नैदानिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.13 सामुदायिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.14 उपभोक्ता मनोविज्ञान
  - 2.3.2.15 परामर्श मनोविज्ञान
  - 2.3.2.16 शैक्षिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.17 एर्गोनॉमिक्स मनोविज्ञान
  - 2.3.2.18 औद्योगिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.19 चिकित्सा मनोविज्ञान
  - 2.3.2.20 फोरेंसिक मनोविज्ञान
  - 2.3.2.21 सैन्य मनोविज्ञान
  - 2.3.2.22 पर्यावरण मनोविज्ञान
  - 2.3.2.23 खेल मनोविज्ञान

2.4 भारत में मनोविज्ञानः पारंपरिक और आधुनिक

2.5 सार-संक्षेप

2.6 इकाई अंत प्रश्न

2.7 शब्दावली

2.8 स्व-मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

2.9 संदर्भ और सुझाव पाठन


---

*प्रो. अमूल्य खुराना, मानविकी और सामाजिक विज्ञान स्कूल, IIT दिल्ली (BPC-001, ब्लॉक से अनुकूलित)

## 2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न कार्य में सक्षम होंगे:

- मनोविज्ञान के अन्य विज्ञानों के संबंध पर चर्चा कर सकेंगे;
- मनोविज्ञान के प्रारंभिक विभाजन का वर्णन कर सकेंगे;
- मनोविज्ञान के विभिन्न उपक्षेत्रों का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- भारतीय संदर्भ में मनोविज्ञान के शोधों को प्रस्तुत कर सकेंगे।

## 2.1 परिचय

पिछले अध्याय में, हमने मनोविज्ञान की परिभाषा, इसके विकास और विज्ञान के रूप में इसकी प्रकृति पर चर्चा की। अब इस अध्याय में हम एक विषय के रूप में मनोविज्ञान पर अपनी चर्चा का विस्तार करेंगे। हम मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों और उप–क्षेत्रों पर चर्चा करेंगे और देखेंगे कि वे कैसे अंतर–संबंधित हैं। इसके अलावा, एक विषय के रूप में, भारत में मनोविज्ञान के विकास पर चर्चा की जाएगी।

## 2.2 मनोविज्ञानः इसका अन्य क्षेत्रों/विज्ञानों से संबंध है

आप पिछले अनुभाग में सीख चुके हैं। कि व्यवहार विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान अन्य भौतिकीय और जैविक विज्ञानों के साथ समान गुणों को साझा करता है। सभी विज्ञान व्यावहारिक अनुप्रयोग के द्वार मानवीय समस्याओं को हल करके उनके जीवन स्तर में सुधार लाने का कार्य करते हैं। भौतिकी, रसायन और गणित के परिणामों से इंजीनियरिंग और प्रौ ोगिकी का विकास हुआ है जिन्होंने जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया हैं। इसी तरह, चिकित्सा विज्ञान ने न केवल कई घातक बीमारियों से लड़ने और उनके नियंत्रणध्उन्मूलन बल्कि कई गंभीर बीमारियों के इलाज/रोकथाम में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। इसी तरह, मनोवैज्ञानिकों ने भी कई तकनीकों का विकास किया है, जिससे लोग अपने मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को सुधार/प्रोत्साहित कर के एक खुशहाल जीवन जी सके। मनोवैज्ञानिक भी कई प्रकार की मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याओं (व्यवहार विकारों) को रोकने और उनका इलाज करने में मदद करते हैं। कभी–कभी, दुनिया की समस्याएं जैसे कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूशण, प्राकृतिक आपदा के बाद, मानव निर्मित आपदाएँ आदि इतनी व्यापक और गंभीर होती हैं। कि कोई भी एक या दो विज्ञान के विषय ऐसी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकतें हैं। विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिकों को मिलकर, समूहिक रूप से ऐसी समस्याओं को निपटना होगा। इसे 'ट्रांजैक्सनलिस्म' के रूप में जाना जाता है (रश, 1972)। विभिन्न विषयों के परिणामों की पारस्परिक अंतःक्रिया के फलस्वरूप ज्ञान के नए क्षेत्रों का उद्भव हुआ हैं। बायोफिजिक्स, बायोकेमिस्ट्री, जियोफिजिक्स इत्यादि ऐसे विषयों के उदाहरण हैं।

विकास के कई वर्षों में एक विशेष विज्ञान, या कभी–कभी एक से अधिक विषयों के विकास ने अन्य विज्ञान के विकास को भी प्रभावित किया हैं। इस प्रकार, विज्ञान का कोई विशेष क्षेत्र, विज्ञान के अन्य क्षेत्रों से पूरी तरह से अलग नहीं हो सकता है, और वैज्ञानिक ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में काफी निकट सम्बंध हैं। यह स्पष्ट है कि मनोविज्ञान वैज्ञानिक शोध के एक स्वतंत्र क्षेत्र के रूप में उभरा है, परन्तु इसका विज्ञान के अन्य क्षेत्रों के साथ बहुत घनिष्ठ संबंध हैं। वास्तव में, एक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का उद्भव बहुत हद तक आनुवांषिकी, शरीर क्रिया विज्ञान, न्यूरोलॉजी, चिकित्सा, भौतिकी, रसायन विज्ञान, साइबरनेटिक्स

और अन्य विज्ञानों में विकास के कारण संभव हुआ हैं। इसके जांच और विश्लेषण के तरीके और साथ ही इसके अनुप्रयोग भी अन्य वैज्ञानिक विषयों के विकास से प्रभावित हुए हैं। बेषक, मनोविज्ञान के विकास के कारण समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, प्रबंधन आदि जैसे अन्य विषयों का विकास को प्रभावित हुआ हैं। यह स्पष्ट है कि, भले ही हम विभिन्न क्षेत्रों के वैज्ञानिक ज्ञान के बारे में विचार कर सकते हैं, परन्तु तथ्य ये है कि इन सभी क्षेत्रों का विस्तार अन्य विषयों के शोध निश्कर्शों पर निर्भर हैं। मुमकिन है कि, यह और स्पष्ट हो जाएगा, अगर हम कुछ अन्य विज्ञान के विषयों के साथ मनोविज्ञान के संबंध की गहनता से जांच करें तो। इस उद्देश्य के लिए, हम अन्य विज्ञान के विषयों को निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत कर सकते हैं।: जैविक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सामाजिक विज्ञान (परमेस्वरन और बीना,2002)।

## 2.3 मनोविज्ञान की प्रवृत्ति और उसके क्षेत्र

जैसा कि आपको पहले बताया गया है कि, मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो मानव व्यवहार को परिस्थितियों के संदर्भ के साथ–साथ अन्य व्यक्तियों के परिपेक्ष्य में भी अध्ययन करता हैं। प्रेक्षण और अधिगम (सीखने) की मदद से, मनोविज्ञान किसी विशेष स्थिति में, किसी व्यक्ति द्वारा किए गए किसी विशिष्ट व्यवहार के कारणों का पता लगाने की कोशिश करता हैं। मोटे तौर पर, सभी विज्ञानों की दो शाखाएँ होती हैं। एक, मूल या अकादमिक शाखा और दूसरा, अनुप्रयुक्त या एप्लाइड शाखा। मूल या अकादमिक शाखा का विकास अकादमिक जिज्ञासा या एक प्रश्न का परिणाम है, जैसे न्यूटन ने पूछा ''सेब जमीन पर ही क्यों गिरता है?'' इस प्रश्न ने ही 'गुरुत्वाकर्शण' के सिद्धांत को जन्म दिया। दूसरी ओर एप्लाइड शाखा, अकादमिक शाखा के शोध से प्राप्त आकड़ों का प्रयोग करके व्यावहारिक।दैनिक जीवन की समस्याओं को हल करने की विधा हैं। हालांकि, यह अंतर बहुत स्पष्ट नहीं है, और एक बिंदु से परे, दोनों शाखा आपस में मिल जाती हैं। उदाहरण के लिए, अकादमिक शाखा के कई सिद्धांत ऐप्लाइड होते हैं, या कई सिद्धांतों में समस्याओं को हल करने के लिए ऐप्लाइड के तौर पर इस्तेमाल होने की क्षमता होती हैं। इसी तरह, कई ऐप्लाइड शाखाएं नए या पूरक सिद्धांतों को जन्म दिया, जिन्हें अकादमिक शाखा में शामिल किया गया हैं। परमेस्वरन और बीना (1988) के अनुसार, मनोविज्ञान को मोटे तौर पर सामान्य मनोविज्ञान और विभेदक मनोविज्ञान में वर्गीकृत किया जा सकता हैं। जहाँ पूर्व का संबंध विशेष रूप से सामान्य वयस्कों में सामान्य व्यवहार और व्यवहारों में समानता की जांच से होता है, जबकि विभेदक मनोविज्ञान मुख्य रूप से व्यक्तिगत भिन्नताओं के प्रेक्षण, मापन और स्पष्टीकरण से संबंधित हैं। धीरे–धीरे, ये दो व्यापक विभाजन सामान्य मनोविज्ञान और अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान के आगे की शाखाओं या खंडों में विकसित हुए।

### 2.3.1 मनोविज्ञान का प्रारंभिक विभाजन

अन्य विज्ञानों की तरह, मनोविज्ञान भी बुनियादी शाखाओं से शुरू हुआ, जिन्हें निम्न रूप में वर्गीकृत किया गयाः प्रायोगिक और गैर–प्रायोगिक । प्रायोगिक शाखा की शुरूआत शारीरिक क्रिया, अधिगम (सीखने) और प्रत्यक्षण प्रक्रियाओं के क्षेत्र में शोध अध्ययनों के साथ शुरू हुई। कई मनोवैज्ञानिक व्यवहार के आधारभूत / मूल कारणों को समझने का प्रयास करते हैं। और इस प्रकार के प्रयास व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए सीधे तौर पर प्रयोग नहीं किये जा सकते हैं। वे मुख्य रूप से बुनियादी अनुसंधान में लगे हुए हैं, और प्रायोगिक विधि का उपयोग करके मौलिक प्रक्रियाओं जैसे कि अधिगम, स्मृति, सोच, संवेदना और प्रत्यक्षण, प्रेरणा और संवेग का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार, प्रायोगिक मनोवैज्ञानिक यह जांचता है कि, व्यवहार को कैसे परिमार्जित किया जा सकता है और लोग

इन परिमार्जन को कैसे बनाए रखते हैं, चिंतन में सूचना के प्रसंस्करण, मानव संवेदी प्रणाली कैसे लोगों को उनके आसपास क्या हो रहा है का अनुभव करने की अनुमति देने के लिए काम करती है ऐसे कारक जो व्यवहार को प्रेरित करते हैं। और दिशा देते हैं।

गैर–प्रयोगात्मक शाखा में व्यक्तित्व, सामाजिक और विकासात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन शामिल हैं। हालाँकि, इनमें से कई अकादमिक शाखाओं की आगे उप–शाखाएँ हैं, यानी विकासात्मक मनोविज्ञान में बाल मनोविज्ञान, किशोरावस्था मनोविज्ञान और जेरोन्टोलॉजी जैसी उप–शाखाएँ हैं। इसी तरह, सामाजिक मनोविज्ञान की एक 'अनुप्रयुक्त सामाजिक मनोविज्ञान (एप्लाइड सोशल सायकॉलजी)' शाखा है और इससे 'संगठनात्मक मनोविज्ञान' नामक एक एप्लाइड क्षेत्र को जन्म दिया। एप्लाइड फील्ड ने कई सिद्धांतों को भी जन्म दिया है, जैसे प्रेरणा के सिद्धांतों को संगठनों में प्रयोग करने के परिणामस्वरूप कई कार्य प्रेरणा सिद्धांत प्रतिपादित हुए हैं।

## 2.3.2 मनोविज्ञान के उपक्षेत्र

जैसा कि ऊपर चर्चा की गई है कि मनोविज्ञान की कई शाखाएं हैं, जिन्हें अकादमिक और एप्लाइड दोनों शाखाओं के तहत वर्गीकृत किया गया हैं। बहुत से लेखक 'शाखा' और 'क्षेत्र' को एक दूसरे के पर्याय के तौर पर उपयोग करते हैं। शाखा व्यापक शब्द प्रतीत होते हैं। जिनमें अकादमिक और एप्लाइड दोनों पहलू शामिल होते हैं, जबकि, क्षेत्र का अर्थ विशिष्ट क्षेत्र है, जहां समस्याओं को हल करने के लिए विशेषज्ञता या विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती हैं। हालाँकि, कुछ लेखक 'क्षेत्र' शब्द का व्यापक रूप में उपयोग करते हैं, उदाहरण के लिए 'मनोविज्ञान के क्षेत्र' में कई उप क्षेत्र हैं। अन्य लोग मनोविज्ञान में 'खंड' और 'उप–खंड' शब्द का उपयोग करते हैं। साफ तौर पर अंतर स्पष्ट नहीं हैं। इसलिए, इन शब्दों का प्रयोग पर्याय के तौर पर किया जाता हैं। मनोविज्ञान के उप–क्षेत्रों ने विभिन्न अन्य विषयों और क्षेत्रों में मनोविज्ञान की व्यापकता को बढ़ा दिया हैं। मनोविज्ञान के निहितार्थों के कारण कई अन्य उप–क्षेत्रों का उद्भव हुआ हैं। यह रोजगार, उ।ोग, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में लागू किए जाते हैं। इससे एक ऐसे उपक्षेत्र का भी उद्भव हुआ है जो व्यक्तियों की मानसिक और भावनात्मक समस्याओं का अध्ययन और आँकलन करता हैं। मनोविज्ञान की व्यापक्ता निम्न उप–क्षेत्रों के तहत समझा जा सकता हैः

### 2.3.2.1 जैव–मनोविज्ञान

यह शाखा व्यवहार के जैविक आधारों से संबंधित हैं। मनोविज्ञान और जीव–विज्ञान के बीच अंतरंग संबंध काफी स्पष्ट हैं। सभी व्यवहार शारीरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होते हैं। मस्तिष्क शरीर के विभिन्न अंगों के कार्यों के समन्वय और संगठन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हैं। वास्तव में, यह सभी प्रकार के जटिल व्यवहार का केंद्र हैं। आनुवंशिकी, जीव विज्ञान की एक शाखा है जो विरासत में मिलने वाले विभिन्न प्रकृतिक गुणों से संबंधित है, मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से भी अनुवंशिकी एक महत्वपूर्ण विज्ञान हैं। वर्षों से, आनुवंशिकीविदों ने महत्वपूर्ण शोध किए हैं, जो व्यवहार के निर्धारण में आनुवंशिकता की भूमिका को सामने लाते हैं। ये शोध विशेष रूप से असामान्य व्यवहार जैसे न्यूरोसिस, मानसिक मंदता, मनोविकार आदि क्षेत्रों में किया गया हैं। आनुवंशिकता के शोध अध्ययनों ने भी बुद्धि स्तर के निर्धारण में जीन की महत्वपूर्ण भूमिका को इंगित किया हैं। हाल के वर्षों में, अंतःस्रावी ग्रंथियों द्वारा स्रावित किए जाने वाले रासायनिक कारकों की, विशेष रूप से हार्मोन की भूमिका, व्यवहार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए दिखाई गई हैं। अंतःस्रावी ग्रंथियों के हार्मोन से भावनात्मक व्यवहार, स्वभाव आदि काफी हद तक प्रभावित होते हैं।

### 2.3.2.2 संज्ञानात्मक मनोविज्ञान

संज्ञानात्मक मनोविज्ञान मानव की सूचना प्रसंस्करण क्षमताओं से संबंधित हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक संज्ञान के सभी आयामों का अध्ययन करते हैं। जैसे कि स्मृति, सोच, समस्या का समाधान, निर्णय लेने, भाषा, और तर्क इत्यादि।

### 2.3.2.3 तुलनात्मक मनोविज्ञान

यह शाखा विभिन्न प्रजातियों, मुख्य तौर पर जानवरों के व्यवहार का अध्ययन और तुलना करता हैं। इसीलिए कुछ लेखक इस क्षेत्र को पशु मनोविज्ञान भी कहते थे। जानवरों के व्यवहार का अध्ययन करके, ये मनोवैज्ञानिक महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करते हैं। जिनकी तुलना मानव व्यवहार के साथ की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, रानी मधुमक्खी निर्देशन, नियंत्रण और श्रमिक मधुमक्खियों द्वारा की गई चीजों को कैसे प्राप्त करती है, इसकी जांच करना नेतृत्व के लिए सार्थक जानकारी प्रदान करता हैं।

### 2.3.2.4 सांस्कृतिक मनोविज्ञान

यह शाखा उन तरीकों का अध्ययन करती है जिनमें संस्कृति, उपसंस्कृति और जातीय समूह सदस्यता किस प्रकार से मानव व्यवहार को प्रभावित करती हैं। मनोवैज्ञानिक, अंतर सांस्कृतिक अनुसंधान करते हैं जो विभिन्न देशों के विभिन्न संस्कृतियों का लोगों के व्यवहार पर क्या असर पड़ता उसकी तुलना करते हैं।

### 2.3.2.5 प्रायोगिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र प्रत्यक्षण, अधिगम (सीखने) और अभिप्रेरणा जैसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के सभी पक्षों की जांच करता हैं। इस क्षेत्र में प्रमुख अनुसंधान विधि के तौर पर नियंत्रित प्रयोग का इस्तेमाल किया जाता हैं। मॉर्गन एट. आल. (1986) ने उल्लेख किया कि प्रायोगिक पद्धति का प्रयोग प्रयोगात्मक मनोवैज्ञानिकों के अलावा अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी किया जाता हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति के व्यवहार पर विभिन्न समूह दबावों और प्रभावों को निर्धारित करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं। तो, इसके नाम के बावजूद, यह वो विधि नहीं है जो प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को अन्य उप–क्षेत्रों से अलग करती हैं। इसके बजाय, प्रायोगिक मनोविज्ञान को दूसरे उप–क्षेत्रों इस बात से अलग किया जाता है कि वह क्या अध्ययन करता है – जैसे कि अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ, स्मृति, चिंतन, संवेदना और प्रत्यक्षण, प्रेरणा, अनुभूति और कुछ परिस्थितियों में व्यवहार के शारीरिक या जैविक आधार।

### 2.3.2.6 लैंगिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र पुरुषों और महिलाओं पर किए गए शोधों के आधार पर लैंगिक भूमिकाओं और प्रभावों का अध्ययन करता हैं। यह पूरे जीवन में लिंग पहचान, और लैंगिक भूमिकाओं के विश्लेषण का प्रयास करता हैं।

### 2.3.2.7 अधिगम का मनोविज्ञान

अधिगम मनोविज्ञान का उप–क्षेत्र यह अध्ययन करता है कि, अधिगम कैसे और क्यों होता हैं। इस क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक अधिगम की सिद्धांत विकसित करते हैं और विभिन्न मानवीय समस्याओं को हल करने के लिए अधिगम के नियमों और सिद्धांतों को लागू करते हैं।

### 2.3.2.8 व्यक्तित्व मनोविज्ञान

व्यक्तित्व मनोविज्ञान का क्षेत्र मानव व्यक्तित्व के लक्षणों और उसकी गत्यात्मकता का अध्ययन करता हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों का आँकलन करने के लिए व्यक्तित्व परीक्षणों और व्यक्तित्व के सिद्धांतों का विकास करते हैं। वे व्यक्तित्व विकास से संबंधित समस्याओं के कारणों की भी पहचान करते हैं।

### 2.3.2.9 शरीर क्रिया/शारीरिक मनोविज्ञान

हम जो करते हैं, महसूस करते हैं, या सोचते हैं, उसको समझने के लिए शरीर क्रिया मनोवैज्ञानिक हमारे तंत्रिका तंत्र और शरीर के भीतर जैव रासायनिक परिवर्तनों की भूमिका की जांच करते हैं। वे अधिकतर प्रायोगिक प्रविधि का उपयोग करते हैं। और मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र और व्यवहार के अन्य शारीरिक स्त्रोतों पर मौलिक शोध करते हैं। शरीर क्रिया मनोविज्ञान न केवल मनोविज्ञान का एक हिस्सा है, बल्कि तंत्रिका जीव विज्ञान नामक व्यापक क्षेत्र का भी हिस्सा माना जाता है जो तंत्रिका तंत्र और इसके कार्यों का अध्ययन करता हैं।

### 2.3.2.10 संवेदना और प्रत्यक्षण मनोविज्ञान

यह क्षेत्र संवेदी अंगों और प्रत्यक्षण की प्रक्रिया के बारे में अध्ययन करता हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले मनोवैज्ञानिक संवेदना के क्रिया–विधि की जांच करते हैं और प्रत्यक्षण या गलत प्रत्यक्षण (भ्रम) के सिद्धांतों को विकसित करने में मदद करते हैं। वे यह भी अध्ययन करते हैं कि हम गहराई की गति को कैसे देखते हैं। और प्रत्यक्षण की प्रक्रिया में व्यक्तिगत अंतर कैसे उत्पन्न होता हैं। इस क्षेत्र के शोधों ने कई नियमों और सिद्धांतों को जन्म दिया है जिससे हमें उन तरीकों को समझने में मदद मिली हैं, जिन्हें हम दिखने वाली दुनिया में सार्थक तरीके से समायोजित करते हैं।

### 2.3.2.11 सामाजिक मनोविज्ञान

सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र दृष्टिकोण, अनुरूपता, अनुनय, पूर्वाग्रह, मित्रता, आक्रामकता और मदद सहित मानव सामाजिक व्यवहार की जांच करने में मदद करता हैं। यह सामाजिक व्यवहार के सभी पहलुओं पर जोर देता है जैसे कि हम कैसे सोचते हैं और दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, हम कैसे प्रभावित करते हैं। और दूसरों से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक मनोवैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। कि हम दूसरों को कैसे देखते हैं। और उन धारणाओं का समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण और व्यवहार को कैसे प्रभावित करता हैं। इस क्षेत्र का विकास समाजषास्त्रियों और सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के संयुक्त योगदान और उनके अनुसंधान के हित में हुआ हैं। हालांकि, उनका ध्यान इस मायने में अलग है कि जहां समाजशास्त्री मुख्य रूप से सामाजिक संस्थानों के साथ संबंध रखते हैं, और सामाजिक मनोविज्ञान आमतौर पर व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सामाजिक मनोवैज्ञानिक इस क्षेत्र के लागू पक्ष पर काम करते हैं, एक सामाजिक संदर्भ में व्यक्ति के दृष्टिकोण और राय को मापने के लिए मानकीकृत तकनीकें विकसित करते हैं। उनका सर्वेक्षण अनुसंधान राजनीतिक राय, उपभोक्ता दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों से संबंधित दृष्टिकोण पर अध्ययन करता हैं। यह राजनेताओं, व्यावसायिक अधिकारियों और समुदाय के नेताओं को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, जिन्हें निर्णय लेते समय इनसे लाभ मिलता हैं।

### 2.3.2.12 नैदानिक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र गंभीर मनोवैज्ञानिक विकारों और भावनात्मक परेशानियों के निदान, कारणों और उपचार पर जोर देता हैं। नैदानिक मनोविज्ञान और मनोरोग के क्षेत्रों के बीच भ्रम होता है क्योंकि नैदानिक मनोवैज्ञानिक और मनोरोग विशेषज्ञ या मनोचिकित्सक दोनों मनोचिकित्सा प्रदान करते हैं। दोनों आमतौर पर कई अस्पतालों/क्लीनिकों में एक साथ काम करते हैं। इसीलिए कई लोग दोनों के बीच के अंतर को लेकर भ्रमित हो जाते हैं। खैर, ये पेशेवरों के दो अलग–अलग समूहों से संबंधित हैं, और उनकी शैक्षिक पृष्ठभूमि के साथ ही निदान और उपचार के तरीके भी भिन्न हैं। मनोचिकित्सक जहाँ चिकित्सक हैं। चिकित्सा अध्ययन पूरा करने के बाद, वे मानसिक रोगों की चिकित्सा (Psychiatry) में डॉक्टर ऑफ मेडिसिन (एमडी) करते हैं और मानसिक विकारों के उपचार में विशेषज्ञ होते हैं, जबकि, नैदानिक मनोवैज्ञानिक एक मास्टरस की डिग्री MA / M-Sc और / या एक डॉक्टरेट डिग्री (डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी [Ph-D-] रखते हैं) या मनोविज्ञान के डॉक्टर [Psy-D]) नैदानिक मनोविज्ञान कि डिग्री रखते हैं।

प्रशिक्षण में इस अंतर के कारण, नैदानिक मनोवैज्ञानिक जिनके पास चिकित्सा प्रशिक्षण नहीं है, वे व्यवहार विकारों के इलाज के लिए दवाओं को नहीं लिख सकते हैं। नैदानिक मनोवैज्ञानिक, मानसिक विकारों के निदान, उपचार और रोकथाम के बेहतर तरीकों का पता लगाने के लिए शोध करते हैं। वे इन विकारों के कारणों की पहचान करने के लिए मानकीकृत परीक्षणों पर भी बहुत निर्भर रहते हैं। व्यवहार व मानसिक विकारों के उपचार के लिए वे मनोचिकित्सकीय पद्धति का उपयोग करते हैं, जिसके लिए उन्हें प्रशिक्षित किया जाता है । लेकिन नैदानिक मनोवैज्ञानिक व्यवहार व मानसिक विकारों के इलाज के लिए दवाओं को लिखने के लिए अधिकृत नहीं हैं क्योंकि उनके पास चिकित्सा प्रशिक्षण नहीं होती हैं।

### 2.3.2.13 सामुदायिक मनोविज्ञान

अनुसंधान, रोकथाम, शिक्षा और परामर्श के माध्यम से, यह क्षेत्र सामुदायिक–क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम लागू करता हैं। सामुदायिक मनोवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक समस्याओं, विचारों और दृष्टिकोणों का प्रयोग करते हैं जो सामाजिक समस्याओं को हल करने में मदद करते हैं और व्यक्तियों को उनके काम, और रहने वाले समूहों के समायोजन में मदद करते हैं। कुछ सामुदायिक मनोवैज्ञानिक अनिवार्य रूप से नैदानिक मनोवैज्ञानिक होते हैं, और वे समुदाय में उन लोगों तक पहुंचने के लिए विशेष रूप से कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिन्हें व्यवहार संबंधी समस्याएं हैं, या जिन्हें इस तरह की समस्याएं होने की संभावनायें हैं। ये मनोवैज्ञानिक न केवल सामुदायिक सदस्यों के मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निपटते हैं बल्कि उनके साथ–साथ उनकी देखभाल करने वालों के मानसिक स्वास्थ्य को भी बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं। अन्य समुदाय मनोवैज्ञानिक समुदाय की समस्याओं को हल करने के लिए व्यवहार विज्ञान के विचारों को अधिकाधिक इस्तेमाल करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। उन्हें 'सामाजिक–समस्या समुदाय मनोवैज्ञानिक' कहा जा सकता हैं। उदाहरण के तौर पर, समुदाय में समूहों के बीच दुश्मनी, पुलिस और समुदाय के सदस्यों के बीच खराब संबंध ा, या रोजगार के अवसरों की कमी के कारण संकट, जैसी समस्याओं पर सामाजिक–समस्या समुदाय मनोवैज्ञानिक काम करते हैं। इस तरह के मनोवैज्ञानिक अक्सर समुदाय के निर्णयों में भाग लेने के लिए कुछ समूहों को प्रोत्साहित करने, बच्चों के पालन–पोशण प्रथाओं को प्रभावी और स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के बारे में मनोवैज्ञानिक जानकारी प्रदान करने, या स्कूलों को यह सलाह देना कि, कैसे उनके पाठ्यक्रमों को सामुदायिक सदस्यों की जरूरतों को पूरा करने वाला बनाया जाए।

### 2.3.2.14 उपभोक्ता मनोविज्ञान

ये क्षेत्र उत्पाद की पैकेजिंग, विज्ञापन, वितरण के तरीके, और उपभोक्ताओं के विशिष्ट गुण का अध्ययन करता हैं। यह क्षेत्र सामाजिक मनोविज्ञान की ही एक शाखा हैं।

### 2.3.2.15 परामर्श मनोविज्ञान

यह शाखा लोगों/व्यक्तियों को पारस्परिक समस्याओं, करियर विकल्प, मध्यम स्तरीय भावनात्मक परेषानियों या व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे कि अधिक मात्रा में भोजन, धीमी गति से सीखने, या एकाग्रता की कमी सहित व्यक्तिगत समस्याओं में मदद करती हैं। परामर्श मनोवैज्ञानिक किसी व्यक्ति की विशिष्ट समस्याओं में सहायता करते हैं, जैसे कि कैरियर की योजना कैसे बनाएं, अधिक प्रभावी पारस्परिक कौशल (जैसे संचार कौशल) कैसे विकसित करें। आजकल, विवाह सम्बंध विशेषज्ञ परामर्शदाता, परिवार परामर्शदाता, स्कूल परामर्शदाता, आदि हैं।

### 2.3.2.16 शैक्षिक मनोविज्ञान

ये क्षेत्र कक्षा की गतिशीलता, शिक्षण शैलियों और अधिगम से संबंधित है। ये मनोवैज्ञानिक शैक्षिक परीक्षण विकसित करते हैं, और शैक्षिक कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करते हैं। शिक्षण योजना से लेकर शिक्षण अक्षमताओं तक शिक्षा की प्रक्रिया के सभी पहलुओं की जांच करते हैं। यह शाखा अधिगम के मनोविज्ञान, और अधिगम एवं प्रेरणा के मनोवैज्ञानिक ज्ञान का इस्तेमाल करके स्कूल में पाठ्यक्रम सीखने की क्षमता बढ़ाने की व्यापक समस्या से संबंधित हैं। स्कूल मनोविज्ञान नामक एक अन्य विशेष उप–क्षेत्र को शैक्षिक मनोविज्ञान में शामिल किया जा सकता हैं।

### 2.3.2.17 एर्गोनॉमिक्स (Ergonomics)

यह मनोविज्ञान का एक क्षेत्र है जो मानव व्यवहार और इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकियों के अंतरसंबंध पर आधारित हैं। यह कर्मचारियों और व्यक्तियों के आराम और सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए कार्य स्थल के वातावरण, उत्पादों या प्रणालियों को डिजाइन करने और उनको प्रबंधित करने की प्रक्रिया से संबंधित हैं।

### 2.3.2.18 औद्योगिक/संगठनात्मक मनोविज्ञान

यह क्षेत्र कर्मचारियों के चयन एवं भर्ती, कार्य निश्पादन का मूल्यांकन, कार्य प्रेरणा और नेतृत्व से लेकर कार्य वातावरण में व्यवहार के सभी पहलुओं की जांच करता हैं। उद्योगों और संगठनों की समस्याओं से निपटने के लिए मनोविज्ञान का पहला प्रयोग बुद्धि, एवं योग्यता परीक्षणों का उपयोग करके कर्मचारियों का चयन और भर्ती करना था। आजकल, कई कंपनियां अपने कर्मचारियों के चयन के कार्यक्रमों के लिए ऐसे परीक्षणों के आधुनिक संस्करणों का उपयोग कर रही हैं। इस क्षेत्र के विशेषज्ञ, संगठन के भीतर प्रबंधन और कर्मचारी प्रशिक्षण, नेतृत्व एवं पर्यवेक्षण, संचार, प्रेरणा, समूहों के मध्य और अंतर–समूह संघर्षों से संबंधित समस्याओं के लिए भी मनोविज्ञान का इस्तेमाल करते हैं। वे काम के माहौल एवं संगठनों और कार्य परिस्थिति में मानवीय संबंधों को बेहतर बनाने के लिए कार्य के दौरान (ऑन–द–जॉब) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इन मनोवैज्ञानिकों को कभी–कभी कार्मिक मनोवैज्ञानिक भी कहा जाता हैं।

### 2.3.2.19 चिकित्सा मनोविज्ञान

चिकित्सा मनोविज्ञान (मेडिकल साइकोलॉजी) का क्षेत्र चिकित्सा समस्याओं के प्रबंधन के लिए मनोविज्ञान के ज्ञान का इस्तेमाल करता है, जैसे कि बीमारी का भावनात्मक प्रभाव, कैंसर के लिए स्व–जांच, दवाएं लेने में अनुपालन। इन मनोवैज्ञानिकों की नौकरी स्वास्थ्य मनोविज्ञान के हिस्से के साथ ओवरलैप होती हैं।

### 2.3.2.20 फोरेंसिक मनोविज्ञान

यह एक ऐसा क्षेत्र है जो मनोविज्ञान और कानून का मिश्रण या संयोजन हैं। इसमें व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन शामिल है (आमतौर पर एक गैरकानूनी कार्य या अपराध के लिए संदिग्ध)। एक फोरेंसिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न परिस्थितियों में शामिल होकर सेवा प्रदान करते हैं, जैसे भविष्य के आपराधिक/आतंकी खतरों के आकलन के समूह में, जेल या अदालत में विशेषज्ञ गवाह के रूप में। वे व्यवहार विश्लेषण, विकास, मूल्यांकन एवं उपचार में पेशेवर रूप से माहिर होते हैं। हालांकि इन्हें कानून और आपराधिक मनोविज्ञान का प्रशिक्षण प्राप्त होता है, लेकिन इन्हें नैदानिक मनोविज्ञान में भी प्रशिक्षित होना पड़ता हैं। इन्हें नैदानिक मूल्यांकन, साक्षात्कार, रिपोर्ट लेखन और मजबूत मौखिक संचार जैसे कौशलों का मर्मज्ञ होने की आवश्यकता होती हैं।

### 2.3.2.21 सैन्य मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की यह शाखा देश के भीतर और साथ ही साथ देश के बाहर तैनात सैन्य बलों के व्यवहार को समझने और उनका पूर्वानुमान लगाने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का इस्तेमाल करने के अध्ययन से सम्बंधित हैं। मनोवैज्ञानिक साधनों का प्रयोग सशस्त्र बलों को तनावपूर्ण स्थितियों में बेहतर ढंग से अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में मदद करता हैं। मनोविज्ञान का ये क्षेत्र दुश्मन सेना से निपटने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों और नियमों के इस्तेमाल पर भी काम करता हैं। यह कार्य और जीवन के बीच संतुलन को बनाने के तरीके को भी दर्शाता हैं।

### 2.3.2.22 पर्यावरण मनोविज्ञान

मनोविज्ञान की ये शाखा मानव और उनकी भलाई के लिए बेहतर जीवन स्थितियों को बढ़ाने के लिए पर्यावरण के मुद्दों पर मनोवैज्ञानिक शोध और समस्या समाधान करते हैं। यह पर्यावरण के साथ मानव के अंतर–संबंधों पर आधारित हैं।

### 2.3.2.23 खेल मनोविज्ञान

खेल मनोवैज्ञानिक, खेल, एथलेटिक प्रदर्शन, व्यायाम और शारीरिक गतिविधि पर मनोविज्ञान के प्रभाव का अध्ययन हैं। यह खेल के विभिन्न पहलुओं से संबंधित है जो पेशेवर एथलीटों और प्रशिक्षकों के बीच प्रेरणा, प्रदर्शन और टीम भावना के स्तर को बढ़ा सकते हैं। यह व्यक्तियों की सकारात्मक स्वास्थ्य के संदर्भ में खेल और व्यायाम में भागीदारी की प्रासंगिकता को भी दर्शाता हैं।

## 2.4 भारत में मनोविज्ञानः पारंपरिक और आधुनिक

जैसा कि पहले बताया गया था, कि मनोविज्ञान पष्चिमी देशों में दर्शनशास्त्र से एक स्वतंत्र धारा के रूप में उभरा और भारत में मनोविज्ञान पर पष्चिमी विचारों और सिद्धांतों का

महत्वपूर्ण प्रभाव था। मूल रूप से भारतीय मनोविज्ञान प्राचीन भारतीय विचारों और उपदेशों पर केंद्रित हैं। परंपरागत रूप से, वेदों और महाकाव्य साहित्य जैसे दार्शनिक और धार्मिक साहित्य ने धार्मिक विचारों और दर्शन को दर्शाया है कि किसी व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में कैसे व्यवहार करना चाहिए। वेद, योग सूत्र और भगवद गीता मानव कार्यों और समाज पर इसके प्रभाव को दर्शाते हैं।

भारत में, मनोविज्ञान को पहली बार 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग में शुरु किया गया था। स्वतंत्र तौर पर मनोविज्ञान विभागों ने कार्य करना स्वतंत्रता के बाद ही शुरु किया। प्रारंभिक वर्षों के दौरान प्रायोगिक मनोविज्ञान को बहुत प्रासंगिकता दी गई थी। मनोविज्ञान के ज्ञान को बढ़ावा देने, आगे बढ़ाने और फैलाने के उद्देश्य से, भारतीय मनोवैज्ञानिक संघ की स्थापना 1924 में की गई थी, उसके एक साल बाद Indian Journal of Psychology (भारतीय मनोविज्ञान शोध-पत्रिका) ने इसका अनुसरण किया। 40 के दशक के उत्तरार्ध में भारत में अनुप्रयोगात्मक (एप्लाइड) मनोविज्ञान को महत्व मिला।

भारत में आधुनिक मनोविज्ञान का विकास भारतीय मनोवैज्ञानिकों द्वारा संवेदना और प्रत्यक्षण को समझाने के लिए विकसित सिद्धांतों के तौर पर देखा जा सकता है (उदाहरण के लिए, एक किताब इंडियन थ्योरी ऑफ परसेप्षन, द्वाराः जे० सिन्हा)। पष्चिमी मनोवैज्ञानिकों की तरह भारत में मनोवैज्ञानिकों ने भी संज्ञान के भारतीय सिद्धांतों की तलाश शुरू कर दी। 1958 में जदुनाथ सिन्हा ने एक किताब संज्ञान पर लिखी और बाद में, संवेग पर एक पुस्तक पर काम किया। आज, ओरिएंटल मनोविज्ञान, बौद्ध मनोविज्ञान, योग मनोविज्ञान तथा जैन मनोविज्ञान आधुनिक मनोवैज्ञानिक साहित्य का एक प्रमुख हिस्सा हैं। कई पष्चिमी आधारित साइकोमेट्रिक टूल को अनुकूलित किया गया है और साथ ही भारतीय उपकरणों को सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार विकसित किया गया हैं। वर्तमान में देश भर में बहुत सारे मनोवैज्ञानिक शोध भी चल रहे हैं।

**स्व मूल्यांकन प्रश्न 1**

निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें:

1) ________________ का क्षेत्र निदान, कारण और उपचार पर जोर देता है गंभीर मनोवैज्ञानिक विकार और भावनात्मक परेषानी।

2) मनोविज्ञान __________________ से एक स्वतंत्र धारा के रूप में उभरा।

3) मिलिट्री साइकोलॉजी की शाखा के अध्ययन को संदर्भित करता है।

............................................................................................................

............................................................................................................

............................................................................................................

............................................................................................................

4) ____________________ अंतर मानव व्यवहार के लिए इंजीनियरिंग प्रौ|ोगिकियों से संबंधित हैं।

5) खेल मनोविज्ञान मनोविज्ञान के प्रभाव का अध्ययन है पर।

............................................................................................................

............................................................................................................

............................................................................................................

## 2.5 सार संक्षेप

इस खण्ड की दूसरी इकाई से यह अभिव्यक्त किया जा सकता है कि मनोविज्ञान की विशिष्ट एक प्रकृति और सम्भावनाएँ हैं। यूनिट में अन्य विषयों के साथ मनोविज्ञान के अंतर–संबंध को समझाया गया। आपको मनोविज्ञान के क्षेत्र और उपक्षेत्रों के बारे में भी पता चला। इसके अलावा, वर्तमान इकाई में मनोविज्ञान के कुछ अन्य अनुप्रयोगों पर भी चर्चा की गई।

## 2.6 इकाई अंत प्रश्न

1) मनोविज्ञान के विभिन्न अनुप्रयोग क्या हैं।?
2) मनोवैज्ञानिकों के कार्यों का वर्णन करें।
3) मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा करें।
4) मनोविज्ञान की प्रकृति और कार्यक्षेत्र पर एक नोट लिखें
5) मनोविज्ञान के प्रारंभिक विभाजन की व्याख्या करें।
6) मनोविज्ञान के निम्नलिखित उपक्षेत्रों पर एक नोट लिखें:
   a) तुलनात्मक मनोविज्ञान
   b) सांस्कृतिक मनोविज्ञान
   c) सामाजिक मनोविज्ञान

## 2.7 शब्दावली

**क्लिनिकल साइकोलॉजी** : यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मानसिक बीमारी और असामान्य व्यवहार के मूल्यांकन और उपचार से संबंधित हैं।

**संज्ञानात्मक मनोविज्ञान** : यह मानव सूचना प्रसंस्करण क्षमताओं से संबंधित हैं। इस क्षेत्र के मनोवैज्ञानिक अनुभूति के सभी पहलुओं का अध्ययन करते हैं। जैसे कि स्मृति, सोच, समस्या समाधान, निर्णय लेने, भाषा, तर्क इत्यादि।

**सामुदायिक मनोविज्ञान** : क्षेत्र अनुसंधान, रोकथाम, शिक्षा और परामर्श के माध्यम से समुदाय–व्यापी मानसिक स्वास्थ्य पर लागू होता हैं। सामुदायिक मनोवैज्ञानिक मनोवैज्ञानिक समस्याओं, विचारों और दृष्टिकोणों का इस्तेमाल करते हैं। ताकि सामाजिक समस्याओं को हल करने और व्यक्तियों को उनके काम और रहने वाले समूहों के समायोजन में मदद मिल सके।

**काउंसलिंग साइकोलॉजी** : यह शाखा लोगों/व्यक्तियों को व्यक्तिगत समस्याओं, करियर विकल्प, मध्यम स्तरीय भावनात्मक परेषानियों या व्यवहार संबंधी समस्याओं जैसे कि अधिक खाने, धीमी गति से सीखने या एकाग्रता की कमी सहित अन्य व्यक्तिगत समस्याओं में मदद करती हैं।

**एर्गोनॉमिक्स** : यह एक क्षेत्र है जो मानव व्यवहार और इंजीनियरिंग प्रौ|ागिकियों के अंतर–सम्बंध पर आधारित हैं। यह कर्मचारियों और व्यक्तियों के आराम और सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए कार्य स्थान के वातावरण, उत्पादों या प्रणालियों को डिजाइन करने और प्रबंधित करने की प्रक्रिया से संबंधित हैं।

## 2.8 स्व मूल्यांकन प्रश्नों के उत्तर

**स्व-मूल्यांकन प्रश्न 1**

1) झूठा
2) झूठा
3) सच
4) असत्य
5) सच

**स्व-मूल्यांकन प्रश्न 2**

1) क्लिनिकल साइकोलॉजी
2) दर्शन
3) सैन्य सिद्धांतों के व्यवहार के साथ–साथ समझने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को लागू करना
4) एर्गोनॉमिक्स
5) खेल, एथलेटिक प्रदर्शन, व्यायाम और शारीरिक गतिविधि

## 2.9 संदर्भ और सुझाव पाठन


Baron, R.A.(1999). *Essentials of Psychology* (2nd edition). USA: Allyn and Bacon.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). *Introduction to Psychology* (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). *Psychology: A Journey*. (3rd edition) Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002). *An Invitation to Psychology*. Hyderabad, (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Bagga, Q. L. & Singh, A. (1990). *Elemrnts of General Psychology*. New Delhi: Arya Book Depot.

Baron, R.A.(1999). *Essentials of Psychology (2nd edition)*. USA: Allyn & Bacon.

Beyer,B. K. (1995). *Critical Thinking. Bloomington*, IN: Phi Delta Kappa Educational Foundation.

Bolles,R.C. (1993). *The Story of Psychology*. Portland:Brooks/Cole Pub Co.

Ciccarelli, S.K.& Meyer, G.E.(2006). *Psychology.* Delhi (India): Pearson Education, Inc.

Clark, K. E. & Miller, G. A. (eds.) (1970). *Psychology*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

Coon, D. & Mitterer, J.O. (2007). *Introduction to Psychology: Gateways to Mind and Behaviour* (11th edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Coon, D. & Mitterer, J.O.(2008). *Psychology: A Journey*. (3rd edition). Delhi (India): Thomson Wadsworth.

Dandapani, S. (2004). *General Psychology*. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Das,J.P.(19980. *The Working Mind: An Introduction to Psychology*, New Delhi, Sage Publication

Eysenck, M.W.(2004). Psychology: *An International Perspective*. Psychology Press.

Feldman, R.S.(2004). *Understanding Psychology (6thedition),* New Delhi (India): Tata McGraw Hill.

Hilgard, E. R., Atkinson, R. C., & Atkinson, R.L. (1975). *Introduction to Psychology* (6th edition). New Delhi: Oxford & IBH Publishing Co.

James, W. (1890). *The Principles of Psychology*. N.Y.:Holt.

Lahey, Benjamin B. (1998). *Psychology: An Introduction*. New Delhi; Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Morgan, C. T., King, R. A., Weisz, J. R. & Schopler, J. (1986). *Introduction to Psychology* (7th edition). New Delhi: Tata McGraw-Hill.

Nairne, J.S. (2003). *Psychology: The Adaptive Mind* (3rd edition). USA:Wadsworth.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (1988). *Invitation to Psychology*. New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Company Limited.

Parameswaran, E.G. & Beena, C. (2002). *An Invitation to Psychology*. Hyderabad (India): Neelkamal Publications Pvt. Ltd.

Rathus, S.A. (2008). *Psychology: Concepts & Connections*. (9th edition). Canada: Wadsworth.

Rush, Harold M.F.(1972).The world of work and the behavioural sciences: A perspective and an overview. In Fred Luthans (Ed.). Contemporary readings in organisational behaviour. New York. McGraw-Hill Book Company.

Schick, T. & Vaughn, L.(2001). How to think about weird things: Critical thinking for a new age. New York: McGraw-Hill.

Tavris,C. & Warde,C. (1997). *Psychology in Perspective* (2nd Ed). New York: Addison Wesley Longman, Inc.

Woodworth, R. S. (1948). *Contemporary Schools of Psychology.* New York: Ronald.


ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

Dalal, A. K. (2011). A journey back to the roots: Psychology in India. *Foundations of Indian Psychology Volume 1: Theories and Concepts*, 27.

Jain, A. K. (2005). Psychology in India. *The Psychologist*, *18*(4), 206-208.

Misra, G., & Paranjpe, E. A. C. (2012). Psychology in modern India. In *Encyclopedia of the History of Psychological Theories* (pp. 881-892). Springer US.

Singh, A. K. (1991). *The Comprehensive History of Psychology*. Motilal Banarsidass Publication.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY